आपातकाल में सृजन फुलवारी

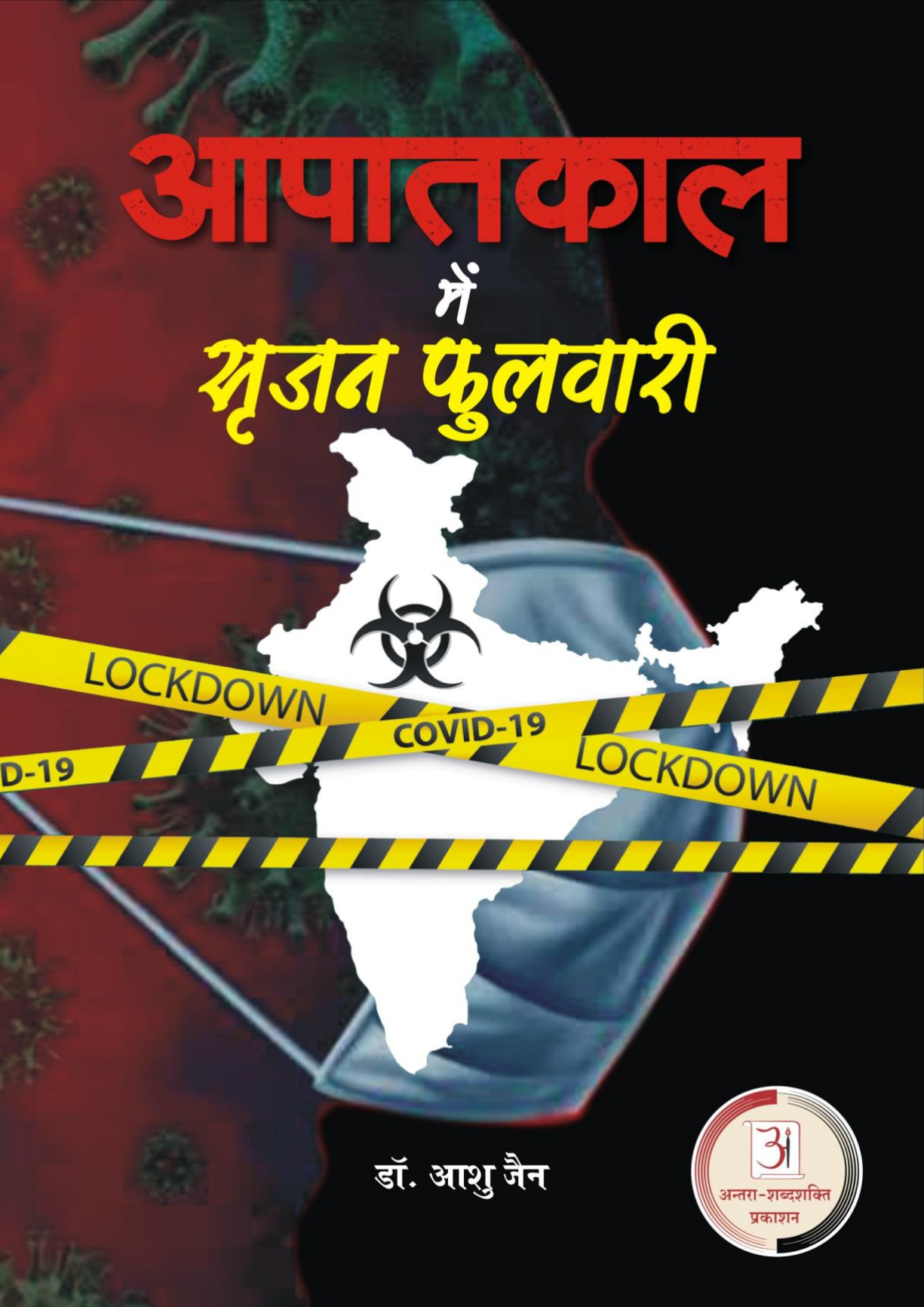

डॉ. आशु जैन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ. आशु जैन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-123-7

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, डॉ. आशु जैन

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY DR. ASHU JAIN

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	इंद्रधनुष	6
2.	ईश्वर	7
3.	देवता या दानव	8
4.	इश्क	9
5.	वक्त बदलता है	10
6.	मुकर गए	11
7.	उलझन	12
8.	वो गरीब	13
9.	सुन लो न माँ	14
10.	शबनम	15
11.	बांट लें अकेलापन	16
12.	प्यार की बरसात	17
13.	काश! समझा पाती	18
14.	साहिल बदल गया	19
15.	आओ कदम बढ़ाएं	20-21

इंद्रधनुष

मेरे मन के आसमान में
इंद्र धनुष से तुम बिखरे हो
मन में लाख छिपी है चाहत
पर बातें कड़वी करते हो।

प्यार मुझ ही से करते हो तो
क्यों उखड़े उखड़े रहते हो?
जानती हूँ कुछ अलग हो सबसे
तभी मेरे दिल में रहते हो।

जब परवाह मेरी करते हो
सच में प्यार से भर देते हो।
जब गुस्सा करते हो जानम
तुम एकदम प्यारे लगते हो।

मेरी मुश्किलों को अपनाकर
जब तुम मेरे संग चलते हो
है पवित्र बन्धन ये अपना
दिल से दिल को ये कहते हो।

ईश्वर

वो
जिनका है
सीधा-सादा, सरल स्वभाव
नहीं रखते कभी
किसी के प्रति दुर्भाव
जिनके मन में उमड़ता है
दुर्जनों के लिए भी प्रेमभाव
ऐसे सज्जन इस दुनिया में
ईश्वर तुल्य हैं
उनके वचन सार्थक हैं
ज्ञान भी अमूल्य है
ऐसे सरल स्वभावी गुणी जनों को
प्रणाम बारम्बार है
असल में उन्ही की कृपा से
चल रहा ये संसार है
वही इस दुनिया में
ईश्वरीय अवतार है
उनसे मिलना जैसे स्वयं
ईश्वर से साक्षात्कार है
उनके दर्शन जैसे
प्रभु का ही दीदार है
गुरु मेरे विद्यासागर कोई और नहीं
भगवान का ही आकार हैं।

देवता या दानव

कोई देवी नहीं हो तुम, मत आना छलावों में,
सब धोखा तुम्हें देंगे, न आना तुम दिखावों में।

तुम्हें बस एक दिन को वो बिठायेंगे धर्म बेदी पर
चढ़ा देंगे बलि तुमको न आना तुम बहकावों में।

तुम्हीं पूजा तुम्हीं श्रद्धा, तुम्हें वो माँ पुकारेंगे
छली जाओगी तुम सबसे, न रहना तुम भुलावों में।

मदद करने तुम्हारी वो, मसीहा बनके आयेंगे
लूट लेंगे आबरू को, और ज़िंदा जलाएंगे

थोड़ी सी समझदारी और थोड़ी सी हिम्मत रख
फर्क पहचान लेना तुम, मसीहा और शैतानों में।

देर जब रात हो जाए, निकलना न घरों से तुम
भेड़िये ताक में बैठे, न मिलना तुम शिकारों में।

तंग कपड़े पहनने से, नहीं हो खूबसूरत तुम
समझ लो बात ये छोटी, कही है जो इशारों में।

इश्क

है जरूरी ये बहुत, कि तुमको मुझसे प्यार हो
और उससे भी जरूरी, कि उस इश्क का इज़हार हो
हाँ मै भी ये मानती हूँ, कि तुमको मेरी फिक्र है
फिर भी हो जाता जरूरी हर बार मेरा जिक्र है।

जानती हूँ तुम्हारा साथ हमेशा है सिर्फ मेरे साथ
फिर भी जरूरी है कि मेरे हाथों में हो तुम्हारा हाथ।
है पता मुझको ये जानम दिल तुम्हारा मैं ही हूँ
फिर भी लगता है जरूरी ये बात सिर्फ तुमसे सुनूँ।

मुझको ये भी है पता तुम्हारी धड़कनों का राज मैं
तुम भी मुझसे ये ही कह दो झूम जाऊँ आज मैं।
तुम मेरे प्रियतम तुम्हारी सिर्फ मैं हूँ प्रियतमा
तुम अगर मेरा हृदय हो मैं तुम्हारी आत्मा।

ऐसे पावन प्रेम के बन्धन में हम दोनों बंधे
है जरूरी ये कि ये बात हम तुम फिर कहें
आज है इश्क-ए-दिवस जब इश्क़ का इजहार है
हाँ!
मैं फिर से कह रही हूँ तुमसे ही मुझको प्यार है।

वक्त बदलता है

समय का पहिया अपनी गति से चलता है
तो फिर तू किस सोच में प्यारे घुलता है।
आज किसी का है वो कल तेरा होगा
तू चाहे न चाहे वक्त बदलता है।

कल जो दुश्मन थे दोस्त बन जाएंगे
अपने कल सपने बनकर ठुकरायेंगे
क्यों आशा रखकर खुद को तू छलता है?
तू चाहे न चाहे वक्त बदलता है।

रिश्ते नाते सब माया के बन्धन हैं
मन में अधिक बढ़ाते ये सब उलझन हैं
क्यों माया के आँचल में तू पलता है?
तू चाहे न चाहे वक्त बदलता है।

कल जो प्यार जताते थे खो जायेंगे
तुझसे पहले किसी के वो हो जायेंगे
प्यार की झूठी आग में तू क्यों जलता है!?
तू चाहे न चाहे वक्त बदलता है।

तेरे दिल तक जो पहुँचे मिल जाएगा
सपनों से अपना बन बाहर आएगा
तेरा दुःख जिसकी आँखों में खलता है
तू चाहे न चाहे वक्त बदलता है

मुकर गए

साल दर साल कितने
साल गुजर गए
न जाने कितने अपने
नजरों से उतर गए
संभाल कर रखे थे
रिश्ते रिश्तेदानी में
वक्त आने पर देखा
उसको चूहे कुतर गए।
आईने की सोहबत में
एक बात जान ली हमने
एक से एक खूबसूरत चेहरे दुनिया से गुजर गए।
हमको मोहब्बत में इकरार-ए-इश्क़ नहीं आया
वो इसे ना समझकर
अपनी हाँ से मुकर गए।

उलझन

उलझ गई हूँ
सुलझाते हुए
झूठे रिश्तों को
निभाते हुए
वो कहता है
दुनिया अच्छी है
शर्म नहीं आती
ये बताते हुए?
औरत ही दुश्मन
है औरत की
दुखी भी नहीं है
खुद को लजाते हुए!
इंसान है तो
इंसानियत भी चाहिए
रो पड़ी है हर प्रजाति
ये समझाते हुए।
हर पल उलझती
और बन्धन में जकड़ती
थक गई अनसुलझे सवाल सुलझाते हुए।

वो गरीब

शीत लहर, बनी कहर
न आ रही कहीं पकड़
सब बेअसर सा हो गया
गरीब वो गुजर गया
प्रकृति के कोप से
ठंड के प्रकोप से
वो सर्दी में ठिठुर गया
गरीब वो गुजर गया।
कम्बलों की खोज में
मन्दिरों में मस्जिदों में
गाँव से शहर गया
गरीब वो गुजर गया।
गांव मिटे बने शहर
हमने फैलाया जहर
वो बेचारा मर गया
गरीब वो गुजर गया।
न सेकता न तापता
वो हो गया है लापता
ठंड से वो डर गया
गरीब वो गुजर गया।

सुन लो न माँ

माँ सुनो न
तुम्हारे होने से मेरा होना है
तुम्हारे खोने से मेरा खोना है
माँ
सुनो न
तुम रहती हो पास तो होती है आस
तुमसे ही तो है मुझे रब पे विश्वास
माँ
सुनो न
तुम हो तभी तक मैं सख्त हूँ
जो तुम नहीं तो मैं भी निशक्त हूँ।
माँ
सुनो न
मुझे जो हौसला दिया थोड़ा खुद भी ले लो
इतना कुछ झेला है थोड़ा और झेल लो
माँ
देखो न
बेटी तुम्हारी कितनी उदास है
आज मेरी आँखों को सिर्फ तुम्हारी तलाश है।
माँ
जीत जाओ न
एक बार ये जंग
आ जाओ न वापस भर दो जीवन में उमंग।
माँ सुनो न
बस एक बार सुन लो न।

शबनम

ये शबनमी आँखें
ये चेहरे पे चमक
वाकई खुश हो या
बस दिखा रहे हो।
ये बार बार मुस्काना
धीरे से नजरें चुराना
दिल लग गया कहीं पे
या कुछ छिपा रहे हो।
मेरी नजरों में तुम हो
तुम अपने में गुम हो
कह दो जो कहना है
क्यों खुद को बहला रहे हो।
चोर नजर से देखते हो
हम देख लें तो झेंपते हो
इधर उधर की बातें बना के
धीरे से शरमा रहे हो।
आओ दो बातें करें
कुछ हसीं मुलाकातें करें
इस शबनमी मौसम में
क्यों हमको तड़पा रहे हो।

बांट लें अकेलापन

चलो
आज एक काम करते हैं
कुछ नहीं कहते
बस एक दूजे को
सुनते हैं।
बहुत हुई
बाते बहसें और लड़ाइयां
आज मौन होकर
सुनते हैं अपनी
खामोशियाँ
होकर साथ एक दूजे के
मिटा लेते हैं
सारी तन्हाईयाँ
चुप रहकर ही
सुलझा लेते हैं
अपनी सारी लड़ाइयां
चलो
आज न कुछ कहें न सुनें
बस महसूस करें
एक दूजे की उपस्थिति
और दूर कर दें
बेइंतहा फैला हुआ
अकेलापन।

प्यार की बरसात

तुमने आकर ज़िन्दगी में
रोशनी राहों में भर दी
हमने भी हंसते हुए ये
ज़िन्दगी तेरे नाम कर दी।
क्या हुआ जो जख्म लाखों
झेले थे नादाँ से दिल ने
तुमने आकर सूने हृदय में
प्यार की बरसात कर दी।
एक तड़प थी कुछ कमी थी
कुछ अधूरापन था बाकी
थामकर ये हाथ मेरा
सारी कमियाँ पूरी कर दी।
मुस्कुराहट भूल बैठी
लब पे रीतापन था गहरा
अब खिली हूँ खिल गई हूँ
मांग जो सिंदूरी भर दी।

काश! समझा पाती

काश! मैं समझा पाती तुम्हें
कितना कठिन होता है
बहते हुए आँसुओ को रोकना
कहते कहते चुप होकर सोचना
धड़कते दिल को जबरदस्ती थामना
कुछ लोगों से मुश्किल भरा सामना
कितना कठिन होता है।
काश मैं बता पाती तुम्हें
कितना मुश्किल है
हर किसी को अपना बनाना
दिन रात सबके लिए सपने सजाना
मकान को घर बनाकर कोना कोना जगमगाना
और जब वही लोग आपको पराया से कर दें
आपके रास्ते मुश्किलों से भर दें
फिर उन्हीं को अपना बनाना
कितना मुश्किल होता है।
काश! समझा पाती मैं तुम्हें
बहुत कठिन है राह जीवन की
दूसरी पारी एक औरत की
खोकर अपनी पहचान
आत्मविश्वास और आत्मसम्मान
नित नई चुनौतियों से सामना
अपने लिए बेपरवाही को भांपना
कितना मुश्किल होता है।
काश! समझा पाती तुम्हें।

साहिल बदल गया

चाहतों ने अब अपना
घर बदल दिया
उन्होंने भी अपना
हमसफ़र बदल दिया
हम खयालो में भी
उन्ही के डूबे हुए
हमे खबर भी न हुई कि
इस कदर बदल दिया।
नादाँ था दिल मेरा
मासूम था बहुत
पाने को तुझे फिर से
एक बार मचल गया।
किस्से सुनाए हमने
तेरी बेवफ़ाई के
रूठा तो था बहुत मगर
फिर भी सम्भल गया।
अब कश्ती तो एक है
मगर मंजिल हुई जुदा
कि लहरे वही रही
और साहिल बदल गया।

आओ कदम बढ़ाएं

आओ मिलकर कदम बढ़ाये, आओ मिलकर अलख जगाएं
स्वच्छ रहे तो स्वस्थ रहेंगे, आओ सबको हम बतलायें।

देश हमारा सबसे प्यारा
सबसे सुंदर सबसे न्यारा
स्वच्छता को हम फैलाकर
देश की सुंदरता को बढायें। आओ....

भारत बन जाए विश्व की रानी
ओढ़ के सुंदर चूनर धानी
स्वच्छ्ता और स्वस्थता का
दीप जला प्रकाश फैलाये। आओ.....

प्रकृति का हाल बुरा है
हर आने वाला साल बुरा है
पर्यावरण सुरक्षित करके
धरा को रहने योग्य बनायें। आओ.....

नदियों में बढ़ता प्रदूषण
जैसे रावण और खरदूषण
उनकी निर्मलता को हम यूं ही
व्यर्थ न कर उन्हें स्वच्छ बनायें। आओ.....

मूक पशु कर रहे पुकार
चारों तरफ है हाहाकार
पशुओं के जीवन की खातिर
हम थोड़े इंसां बन जाएं। आओ....

खुद रहने को काटे जंगल
कहाँ शहर और कहाँ मरुस्थल
अगर चाहिए जीवन लंबा
तो सब मिलकर वृक्ष लगायें। आओ....

तन को तो हम स्वच्छ करें ही
मन को भी हम उजला कर लें
जाति पाँति का भेद मिटाकर
सबसे भाईचारा निभायें। आओ.....

बेटा बेटी में फर्क न समझें
सबको हम जीने का हक दें
गंदी घिनौनी सोच परे कर
ऊँची मानसिकता बनायें। आओ....

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

डॉ. आशु जैन

E-mail - jainashu676@gmail.com

Mobile - 9479641344

जब सम्पूर्ण देश विषम परिस्थितियों में हो तो मन को संतुलित रख पाना अति दुर्लभ हो जाता है ऐसी स्थिति में लेखन मन को संयमित रखने में बहुत सहायक होता है। प्रस्तुत १५ रचनाएँ मन में उठ रहे ज्वारभाटे का परिणाम हैं कभी शांति तो कभी अस्थिरता, कभी प्रेम तो कभी कड़वाहट। समय बदलने पर मनोभाव निश्चित ही बदल जाते हैं उन्ही बदलते मनोभावों और विचारों का मिला जुला प्रयास इन रचनाओं के माध्यम से प्रदर्शित है। साथ ही आदरणीय प्रीति जी एवं समस्त अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन का हृदय से आभार जिन्होंने इतनी विषमता में भी किसी तरह के कार्य को रुकने नहीं दिया वरन लेखन कार्य प्रोत्साहित किया जिसके परिणामस्वरूप ये समस्त रचनाएँ आकार ले सकीं।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क– 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-123-7

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/